

## परिशिष्टम्

### संस्कृतस्य सेवनम्

संस्कृतस्य सेवनं, संस्कृताय जीवनम्।  
लोकहितसमृद्धये भवतु तनुसर्पणम्॥

कार्यगौरवं स्मरन्  
विघ्नवारिधिं तरन्  
लक्ष्यसिद्धिमक्षिसात् करोमि सोद्यमः स्वयम्।  
यावदेति संस्कृतं, प्रतिजनं गृहं गृहम्  
तावदविरता गतिस्तावदनुपदं पदम्॥ 1॥

कामये न सम्पदं  
भोगसाधनं सुखम्  
किञ्चिदन्यदाद्रिये विना न संस्कृतोन्नतिम्।  
गौरवास्पदं पदं, नेतुमद्य संस्कृतम्  
बद्धकटिरयं जनो निधाय जीवनं पणम्॥ 2॥

भाषिता च वागियं  
भाषिता भवेदध्रुवम्  
भाष्यमाणतां समेत्य राजतां पुनश्चिरम्।  
भरतभूमिभूषणं सर्ववाग्विभूषणम्  
संस्कृतिप्रवाहकं संस्कृतं विराजताम्॥3॥

## चिरनवीना संस्कृता एषा

चिरनवीना संस्कृता एषा, गीर्वाणभाषा  
चिरनवीना संस्कृता एषा ॥  
महतो भूतस्य निःश्वसितम्  
अस्ति यस्याम्, अतिपुरातन—वेदसाहित्यम्  
शास्त्रापूरैः स्मृतिविचारैः  
वरकवीनां काव्यसारैः  
चित्रिता मञ्जुला मञ्जुषा, मञ्जुला भाषा ॥ चिरनवीना ॥

वाल्मीकि—व्यास—मुनिरचितं,  
रामायणं महाकाव्यं महाभारतं  
कलैव्यकिल्बिष—कलित—पार्थ  
कार्यविषये योजयन्ती  
अस्ति यस्यां भगवती गीता, भगवता कथिता ॥ चिरनवीना ॥

मातृभाषा मातृभाषाणाम्, भवितुमर्हा  
राष्ट्रभाषा भारतीयानाम्,  
भवतु भाषाद्वेषनाशः  
सर्वथा उद्वेषयामः  
भारतीया भारती एषा, अनुपमा सरसा ॥ चिरनवीना ॥



## शब्दरूपाणि

**ऋकारान्तः पुंलिङ्गः पितृ ( पिता ) शब्दः**

| विभक्तिः  | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|-----------|-----------|------------|------------|
| प्रथमा    | पिता      | पितरौ      | पितरः      |
| द्वितीया  | पितरम्    | पितरौ      | पितृन्     |
| तृतीया    | पित्रा    | पितृभ्याम् | पितृभिः    |
| चतुर्थी   | पित्रे    | पितृभ्याम् | पितृभ्यः   |
| पञ्चमी    | पितुः     | पितृभ्याम् | पितृभ्यः   |
| षष्ठी     | पितुः     | पित्रोः    | पितृणाम्   |
| सप्तमी    | पितरि     | पित्रोः    | पितृषु     |
| सम्बोधनम् | हे पितःः! | हे पितरौ!  | हे पितरःः! |

एवमेव भ्रातृ, जामातृ, इत्यादयः।

**ऋकारान्तः पुंलिङ्गः 'कर्तृ' ( करने वाला ) शब्दः**

| विभक्तिः  | एकवचनम्    | द्विवचनम्   | बहुवचनम्    |
|-----------|------------|-------------|-------------|
| प्रथमा    | कर्ता      | कर्तरौ      | कर्तरः      |
| द्वितीया  | कर्तराम्   | कर्तरौ      | कर्तृन्     |
| तृतीया    | कर्त्रा    | कर्तृभ्याम् | कर्तृभिः    |
| चतुर्थी   | कर्त्रे    | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः   |
| पञ्चमी    | कर्तुः     | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः   |
| षष्ठी     | कर्तुः     | कर्त्रोः    | कर्तृणाम्   |
| सप्तमी    | कर्तरि     | कर्त्रोः    | कर्तृषु     |
| सम्बोधनम् | हे कर्तःः! | हे कर्तरौ!  | हे कर्तरःः! |

एवमेव धातृ, दातृ, इत्यादयः।

ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्गः ‘मातृ’ ( माता ) शब्दः

| विभक्तिः  | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्  |
|-----------|----------|------------|-----------|
| प्रथमा    | माता     | मातरौ      | मातरः     |
| द्वितीया  | मातरम्   | मातरौ      | मातृः     |
| तृतीया    | मात्रा   | मातृभ्याम् | मातृभिः   |
| चतुर्थी   | मात्रे   | मातृभ्याम् | मातृभ्यः  |
| पञ्चमी    | मातुः    | मातृभ्याम् | मातृभ्यः  |
| षष्ठी     | मातुः    | मात्रोः    | मातृणाम्  |
| सप्तमी    | मातरि    | मात्रोः    | मातृषु    |
| सम्बोधनम् | हे मातः! | हे मातरौ!  | हे मातरः! |

उकारान्तः नपुंसकलिङ्गः ‘मधु’ ( शहद ) शब्दः

| विभक्तिः  | एकवचनम्       | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|-----------|---------------|------------|------------|
| प्रथमा    | मधु           | मधुनी      | मधूनि      |
| द्वितीया  | मधु           | मधुनी      | मधूनि      |
| तृतीया    | मधुना         | मधुभ्याम्  | मधुभिः     |
| चतुर्थी   | मधुने         | मधुभ्याम्  | मधुभ्यः    |
| पञ्चमी    | मधुनः         | मधुभ्याम्  | मधुभ्यः    |
| षष्ठी     | मधुनः         | मधुनोः     | मधूनाम्    |
| सप्तमी    | मधुनि         | मधुनोः     | मधुषु      |
| सम्बोधनम् | हे मधु, मधो ! | हे मधुनी ! | हे मधूनि ! |

एवमेव वपु, वस्तु इत्यादयः।

इकारान्तः “वारि” ( जल ) शब्दः ( नपुंसकलिङ्गः )

| विभक्तिः  | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्    |
|-----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा    | वारि      | वारिणी      | वारीणि      |
| द्वितीया  | वारि      | वारिणी      | वारीणि      |
| तृतीया    | वारिणा    | वारिभ्याम्  | वारिभिः     |
| चतुर्थी   | वारिणे    | वारिभ्याम्  | वारिभ्यः    |
| पञ्चमी    | वारिणः    | वारिभ्याम्  | वारिभ्यः    |
| षष्ठी     | वारिणः    | वारिणोः     | वारीणाम्    |
| सप्तमी    | वारिणि    | वारिणोः     | वारिषु      |
| सम्बोधनम् | हे वारे ! | हे वारिणी ! | हे वारीणि ! |

सकारान्तः “चन्द्रमस्” ( चन्द्रमा ) शब्दः ( हलन्त पुंलिङ्गः )

| विभक्तिः  | एकवचनम्       | द्विवचनम्      | बहुवचनम्       |
|-----------|---------------|----------------|----------------|
| प्रथमा    | चन्द्रमा:     | चन्द्रमसौ      | चन्द्रमसः      |
| द्वितीया  | चन्द्रमसम्    | चन्द्रमसौ      | चन्द्रमसः      |
| तृतीया    | चन्द्रमसा     | चन्द्रमाभ्याम् | चन्द्रमाभिः    |
| चतुर्थी   | चन्द्रमसे     | चन्द्रमाभ्याम् | चन्द्रमाभ्यः   |
| पञ्चमी    | चन्द्रमसः     | चन्द्रमाभ्याम् | चन्द्रमाभ्यः   |
| षष्ठी     | चन्द्रमसः     | चन्द्रमसोः     | चन्द्रमसाम्    |
| सप्तमी    | चन्द्रमसि     | चन्द्रमसोः     | चन्द्रमस्सु    |
| सम्बोधनम् | हे चन्द्रमसः! | हे चन्द्रमसौ ! | हे चन्द्रमसः ! |

तकारान्तः “मरुत्” ( वायु ) शब्दः ( हलन्त पुलिङ्गः )

| विभक्तिः  | एकवचनम्       | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|-----------|---------------|------------|------------|
| प्रथमा    | मरुत्         | मरुतौ      | मरुतः      |
| द्वितीया  | मरुतम्        | मरुतौ      | मरुतः      |
| तृतीया    | मरुता         | मरुदभ्याम् | मरुदभ्यः   |
| चतुर्थी   | मरुते         | मरुदभ्याम् | मरुदिभः    |
| पञ्चमी    | मरुतः         | मरुदभ्याम् | मरुदभ्यः   |
| षष्ठी     | मरुतः         | मरुतोः     | मरुताम्    |
| सप्तमी    | मरुति         | मरुतोः     | मरुत्सु    |
| सम्बोधनम् | हे मरुत्-द् ! | हे मरुतौ ! | हे मरुतः ! |

हलन्तः पुंलिङ्गः 'राजन्' ( राजा ) शब्दः

| विभक्तिः  | एकवचनम्       | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|-----------|---------------|------------|------------|
| प्रथमा    | राजा          | राजानौ     | राजानः     |
| द्वितीया  | राजानम्       | राजानौ     | राज्ञः     |
| तृतीया    | राजा          | राजभ्याम्  | राजभिः     |
| चतुर्थी   | राजे          | राजभ्याम्  | राजभ्यः    |
| पञ्चमी    | राज्ञः        | राजभ्याम्  | राजभ्यः    |
| षष्ठी     | राज्ञः        | राज्ञोः    | राज्ञाम्   |
| सप्तमी    | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः    | राजसु      |
| सम्बोधनम् | हे राजन्!     | हे राजानौ! | हे राजानः! |

हलन्तः पुंलिङ्गः 'महत्' ( बड़ा ) शब्दः

| विभक्तिः  | एकवचनम्  | द्विवचनम् | बहुवचनम्    |
|-----------|----------|-----------|-------------|
| प्रथमा    | महान्    | महानौ     | महान्तः     |
| द्वितीया  | महान्तम् | महानौ     | महतः        |
| तृतीया    | महता     | महदभ्याम् | महदभिः      |
| चतुर्थी   | महते     | महदभ्याम् | महदभ्यः     |
| पञ्चमी    | महतः     | महदभ्याम् | महदभ्यः     |
| षष्ठी     | महतः     | महतोः     | महताम्      |
| सप्तमी    | महति     | महतोः     | महत्सु      |
| सम्बोधनम् | हे महन्! | हे महानौ! | हे महान्तः! |

हलन्तः नपुंसकलिङ्गः 'महत्' ( बड़ा ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | महत्    | महती      | महन्ति   |
| द्वितीया | महत्    | महती      | महन्ति   |

तृतीयातः सप्तमीपर्यन्तं पुंलिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति ।

### हलन्तः स्रीलिङ्गः 'महती' ( बड़ा ) शब्दः

| विभक्तिः  | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्    |
|-----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा    | महती      | महत्यौ      | महत्यः      |
| द्वितीया  | महतीम्    | महत्यौ      | महतीः       |
| तृतीया    | महत्या    | महतीभ्याम्  | महतीभिः     |
| चतुर्थी   | महत्यै    | महतीभ्याम्  | महतीभ्यः    |
| पञ्चमी    | महत्याः   | महतीभ्याम्  | महतीभ्यः    |
| षष्ठी     | महत्याः   | महत्योः     | महतीनाम्    |
| सप्तमी    | महत्याम्  | महत्योः     | महतीषु      |
| सम्बोधनम् | हे महति ! | हे महत्यौ ! | हे महत्यः ! |

### पुलिङ्गः 'सर्व' ( सब ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम्    | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|----------|------------|-------------|-----------|
| प्रथमा   | सर्वः      | सर्वौ       | सर्वे     |
| द्वितीया | सर्वम्     | सर्वौ       | सर्वान्   |
| तृतीया   | सर्वेण     | सर्वाभ्याम् | सर्वैः    |
| चतुर्थी  | सर्वस्मै   | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| पञ्चमी   | सर्वस्मात् | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| षष्ठी    | सर्वस्य    | सर्वयोः     | सर्वेषाम् |
| सप्तमी   | सर्वस्मिन् | सर्वयोः     | सर्वेषु   |

### स्रीलिङ्गः 'सर्व' ( सब ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम्    | द्विवचनम्   | बहुवचनम्  |
|----------|------------|-------------|-----------|
| प्रथमा   | सर्वा      | सर्वे       | सर्वाः    |
| द्वितीया | सर्वाम्    | सर्वे       | सर्वाः    |
| तृतीया   | सर्वया     | सर्वाभ्याम् | सर्वाभिः  |
| चतुर्थी  | सर्वस्यै   | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| पञ्चमी   | सर्वस्याः  | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| षष्ठी    | सर्वस्याः  | सर्वयोः     | सर्वासाम् |
| सप्तमी   | सर्वस्याम् | सर्वयोः     | सर्वासु   |

नपुंसकलिङ्गः ‘सर्व’ ( सब ) शब्दः

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | सर्वम्  | सर्वे     | सर्वाणि  |
| द्वितीया | सर्वम्  | सर्वे     | सर्वाणि  |

तृतीयातः सप्तमीपर्यन्तं पुल्लिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति । तथा सर्वनामशब्देषु सम्बोधनं न भवति ।

‘कति’ ( कितने ) शब्दः

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | —       | —         | कति      |
| द्वितीया | —       | —         | कति      |
| तृतीया   | —       | —         | कतिभिः   |
| चतुर्थी  | —       | —         | कतिभ्यः  |
| पञ्चमी   | —       | —         | कतिभ्यः  |
| षष्ठी    | —       | —         | कतीनाम्  |
| सप्तमी   | —       | —         | कतिषु    |

कति शब्दः नित्यबहुवचनान्तः अस्ति । तथा त्रिषु लिङ्गेषु एवमेव रूपाणि भवन्ति ।

सकारान्तः पुल्लिङ्गः ‘अदस्’ ( वह ) शब्दः

| विभक्ति: | एकवचनम्   | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|-----------|----------|
| प्रथमा   | असौ       | अमू       | अमी      |
| द्वितीया | अमुम्     | अमू       | अमून्    |
| तृतीया   | अमुना     | अमूभ्याम् | अमीभिः   |
| चतुर्थी  | अमुष्मै   | अमूभ्याम् | अमीभ्यः  |
| पञ्चमी   | अमुष्मात् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः  |
| षष्ठी    | अमुष्म    | अमुयोः    | अमीषाम्  |
| सप्तमी   | अमुष्मिन् | अमुयोः    | अमीषु    |

सकारान्तः स्त्रीलिङ्गः 'अदस्' ( वह ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम्   | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|-----------|----------|
| प्रथमा   | असौ       | अमू       | अमूः     |
| द्वितीया | अमूम्     | अमू       | अमूः     |
| तृतीया   | अमुया     | अमूभ्याम् | अमूभिः   |
| चतुर्थी  | अमुष्यै   | अमूभ्याम् | अमूभ्यः  |
| पञ्चमी   | अमुष्याः  | अमूभ्याम् | अमूभ्यः  |
| षष्ठी    | अमुष्याः  | अमुयोः    | अमूषाम्  |
| सप्तमी   | अमुष्याम् | अमुयोः    | अमूषु    |

सकारान्तः नपुंसकलिङ्गः 'अदस्' ( वह ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | अदः     | अमू       | अमूनि    |
| द्वितीया | अदः     | अमू       | अमूनि    |

तृतीयातः सप्तमीपर्यन्तम् पुंलिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति ।

मकारान्त पुंलिङ्गः 'इदम्' ( यह ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | अयम्    | इमौ       | इमे      |
| द्वितीया | इमम्    | इमौ       | इमान्    |
| तृतीया   | अनेन    | आभ्याम्   | एभिः     |
| चतुर्थी  | अस्मै   | आभ्याम्   | एभ्यः    |
| पञ्चमी   | अस्मात् | आभ्याम्   | एभ्यः    |
| षष्ठी    | अस्य    | अनयोः     | एषाम्    |
| सप्तमी   | अस्मिन् | अनयोः     | एषु      |

मकारात्तः स्त्रीलिङ्गः ‘इदम्’ ( यह ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | इयम्    | इमे       | इमाः     |
| द्वितीया | इमाम्   | इमे       | इमाः     |
| तृतीया   | अनया    | आभ्याम्   | आभिः     |
| चतुर्थी  | अस्यै   | आभ्याम्   | आभ्यः    |
| पञ्चमी   | अस्याः  | आभ्याम्   | आभ्यः    |
| षष्ठी    | अस्याः  | अनयोः     | आसाम्    |
| सप्तमी   | अस्याम् | अनयोः     | आसु      |

मकारातः नपुंसकलिङ्गः ‘इदम्’ ( यह ) शब्दः

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा   | इदम्    | इमे       | इमानि    |
| द्वितीया | इदम्    | इमे       | इमानि    |

तृतीयातः सप्तमीपर्यन्तं पुंलिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति ।

## धातुस्कृपाणि

### परस्मैपदम्

‘पठ्’ ( पढ़ना ) धातुः, विधिलिङ्गिकारः ( चाहिए अर्थ में )

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | पठेत्   | पठेताम्   | पठेयुः   |
| मध्यमपुरुषः | पठे:    | पठेतम्    | पठेत     |
| उत्तमपुरुषः | पठेयम्  | पठेव      | पठेम     |

‘गम्’ ( जाना ) धातुः, विधिलिङ्गिकारः

| पुरुषः      | एकवचनम्  | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|----------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | गच्छेत्  | गच्छेताम् | गच्छेयुः |
| मध्यमपुरुषः | गच्छे:   | गच्छेतम्  | गच्छेत   |
| उत्तमपुरुषः | गच्छेयम् | गच्छेव    | गच्छेम   |

एवमेव वद्, जीव, स्मृ, लिख, हस, खाद, क्रीड, पत् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति ।

## आत्मनेपदम्

**‘लभ्’ ( पाना ) धातुः, लट्टलकारः ( वर्तमानकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | लभते    | लभेते     | लभन्ते   |
| मध्यमपुरुषः | लभसे    | लभेथे     | लभध्वे   |
| उत्तमपुरुषः | लभे     | लभावहे    | लभामहे   |

**‘लभ्’ ( पाना ) धातुः, लइलकारः ( भूतकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | अलभत    | अलभेताम्  | अलभन्त   |
| मध्यमपुरुषः | अलभथाः  | अलभेथाम्  | अलभध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अलभे    | अलभावहि   | अलभामहि  |

**‘लभ्’ ( पाना ) धातुः, लृट्टलकारः ( भविष्यकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम्  | द्विवचनम्  | बहुवचनम्   |
|-------------|----------|------------|------------|
| प्रथमपुरुषः | लप्स्यते | लप्स्येते  | लप्स्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | लप्स्यसे | लप्स्येथे  | लप्स्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | लप्स्ये  | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |

**‘सेव्’ ( सेवा करना ) धातुः, लट्टलकारः ( वर्तमानकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | सेवते   | सेवेते    | सेवन्ते  |
| मध्यमपुरुषः | सेवसे   | सेवेथे    | सेवध्वे  |
| उत्तमपुरुषः | सेवे    | सेवावहे   | सेवामहे  |

**‘सेव्’ ( सेवा करना ) धातुः, लइलकारः ( भूतकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम्  |
|-------------|---------|-----------|-----------|
| प्रथमपुरुषः | असेवत   | असेवेताम् | असेवन्त   |
| मध्यमपुरुषः | असेवथाः | असेवेथाम् | असेवध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | असेवे   | असेवावहि  | असेवामहि  |

**‘सेव्’ ( सेवा करना ) धातुः लृद्लकारः ( भविष्यकाले )**

| पुरुषः      | एकवचनम्   | द्विवचनम्   | बहुवचनम्    |
|-------------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमपुरुषः | सेविष्यते | सेविष्येते  | सेविष्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | सेविष्यसे | सेविष्येथे  | सेविष्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | सेविष्ये  | सेविष्यावहे | सेविष्यामहे |

एवमेव रुच्, रम्, भाष्, सह्, शिक्ष्, वृत्, वृध्, शुभ्, यत् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति ।

## संस्कृतसङ्ख्या

|                          |      |                              |      |
|--------------------------|------|------------------------------|------|
| एकविंशतिः                | — २१ | षट्त्रिंशत्                  | — ३६ |
| द्वाविंशतिः              | — २२ | सप्तत्रिंशत्                 | — ३७ |
| त्रयोविंशतिः             | — २३ | अष्टत्रिंशत्                 | — ३८ |
| चतुर्विंशतिः             | — २४ | नवत्रिंशत् / एकोनचत्वारिंशत् | — ३९ |
| पञ्चविंशतिः              | — २५ | चत्वारिंशत्                  | — ४० |
| षड्विंशतिः               | — २६ | एकचत्वारिंशत्                | — ४१ |
| सप्तविंशतिः              | — २७ | द्विचत्वारिंशत्              | — ४२ |
| अष्टविंशतिः              | — २८ | त्रिचत्वारिंशत्              | — ४३ |
| नवविंशतिः / एकोनत्रिंशत् | — २९ | चतुश्चत्वारिंशत्             | — ४४ |
| त्रिंशत्                 | — ३० | पञ्चचत्वारिंशत्              | — ४५ |
| एकत्रिंशत्               | — ३१ | षट्चत्वारिंशत्               | — ४६ |
| द्वात्रिंशत्             | — ३२ | सप्तचत्वारिंशत्              | — ४७ |
| त्रयस्त्रिंशत्           | — ३३ | अष्टचत्वारिंशत्              | — ४८ |
| चतुर्स्त्रिंशत्          | — ३४ | नवचत्वारिंशत् / एकोनपञ्चाशत् | — ४९ |
| पञ्चत्रिंशत्             | — ३५ | पञ्चाशत्                     | — ५० |

## सन्धि-परिचयः

सन्धिः अर्थात् मेलनम् । वर्णयोः वर्णानां वा मेलनं सन्धिः । द्वयोः वर्णयोः बहूनां वर्णानां वा संयोगेन यः रूपान्तरः जायते सः सन्धिः ।

षष्ठ्यां सप्तम्यां च कक्षायां छात्राः स्वरव्यञ्जनसन्धी विस्तृतरूपेण पठितवन्तः । अतः अष्टम्यां कक्षायां स्वरव्यञ्जनसन्धी संक्षेपेण तथा च विसर्गसन्धिः विस्तृतरूपेण पाठ्यक्रमे समावेशितः ।

### स्वरसन्धिः

|               |   |            |  |                 |   |              |
|---------------|---|------------|--|-----------------|---|--------------|
| विद्या + आलयः | = | विद्यालयः  |  | मुनि + इन्द्रः  | = | मुनीन्द्रः   |
| साधु + उक्तिः | = | साधूक्तिः  |  | पितृ + ऋणम्     | = | पितृणम्      |
| गज + इन्द्रः  | = | गजेन्द्रः  |  | महा + उत्सवः    | = | महोत्सवः     |
| देव + ऋषिः    | = | देवर्षिः   |  | तव + लृकारः     | = | तवल्कारः     |
| एक + एकम्     | = | एकैकम्     |  | राज + ऐश्वर्यम् | = | राजैश्वर्यम् |
| जल + ओघः      | = | जलौघः      |  | सुख + ऋतः       | = | सुखार्तः     |
| यदि + अपि     | = | यद्यपि     |  | सु + आगतम्      | = | स्वागतम्     |
| पितृ + आज्ञा  | = | पित्राज्ञा |  | प्रति + एकम्    | = | प्रत्येकम्   |
| मधु + अरिः    | = | मध्वरिः    |  | वने + अपि       | = | वनेऽपि       |
| चे + अनम्     | = | चयनम्      |  | हरे + अत्र      | = | हरेऽत्र      |
| भो + अनम्     | = | भवनम्      |  | को + अपि        | = | कोऽपि        |
| गै + अकः      | = | गायकः      |  | पौ + अकः        | = | पावकः        |

### व्यञ्जनसन्धिः

|                 |   |              |  |              |   |           |
|-----------------|---|--------------|--|--------------|---|-----------|
| सत् + जनः       | = | सज्जनः       |  | दुष् + तः    | = | दुष्टः    |
| उत् + डीनः      | = | उड्डीनः      |  | सत् + आचारः  | = | सदाचारः   |
| अच् + अन्तः     | = | अजन्तः       |  | सद् + कारः   | = | सत्कारः   |
| तद् + परः       | = | तत्परः       |  | धर्म् + चर   | = | धर्म् चर  |
| पुस्तकम् + पठति | = | पुस्तकं पठति |  | वाक् + ईशः   | = | वागीशः    |
| जगत् + ईशः      | = | जगदीशः       |  | तत् + लीनः   | = | तत्त्वीनः |
| दिक् + गजः      | = | दिग्गजः      |  | सद् + पुत्रः | = | सत्पुत्रः |

### विसर्गसन्धिः

**परिभाषा—**विसर्गेण सह स्वरस्य अथवा व्यञ्जनस्य मेलनेन यः विकारः भवति सः विसर्गसन्धिः ।

**यथा-** मनः + रथः = मनोरथः

मनः + हरः = मनोहरः

## नियमः निमाङ्किता वर्तने —

1. विसर्गानन्तरं 'च्' अथवा 'छ्' स्यात् तदा विसर्गस्य स्थाने 'श्' भवति।

|      |                 |   |               |
|------|-----------------|---|---------------|
| यथा- | रामः + चलति     | = | रामश्चलति     |
|      | बालकः + चलति    | = | बालकश्चलति    |
|      | कः + चित्       | = | कश्चित्       |
|      | उत्तमः + छात्रः | = | उत्तमश्छात्रः |

2. यदि विसर्गपश्चात् 'त्' अथवा 'थ्' स्यात् तदा विसर्गस्य स्थाने 'स्' भवति।

|      |                  |   |                |
|------|------------------|---|----------------|
| यथा- | रामः + तिष्ठति   | = | रामस्तिष्ठति   |
|      | जनाः + तिष्ठन्ति | = | जनास्तिष्ठन्ति |
|      | नमः + ते         | = | नमस्ते         |
|      | यशः + तनोति      | = | यशस्तनोति      |
|      | नरः + तरति       | = | नरस्तरति       |

3. यदि विसर्गात् पूर्वम् अथवा अनन्तरम् 'अ' स्यात् तदा 'अ'-विसर्गयोः स्थाने 'ओ' भवति

तथा अनन्तरं यः अकारः तस्य अवग्रहः (५) भवति।

|      |                |   |             |
|------|----------------|---|-------------|
| यथा- | कः + अयम्      | = | कोऽयम्      |
|      | कः + अपि       | = | कोऽपि       |
|      | रामः + अस्ति   | = | रामोऽस्ति   |
|      | शिवः + अर्च्यः | = | शिवोऽर्च्यः |
|      | रामः + अवदत्   | = | रामोऽवदत्   |

4. यदि विसर्गात् पूर्वम् 'अ' तथा अनन्तरम् 'अ' हस्वं स्वरं त्यक्त्वा अन्यः कोऽपि स्वरवर्णः

स्यात् तदा विसर्गस्य लोपः भवति।

|      |                |   |             |
|------|----------------|---|-------------|
| यथा- | कः + आगच्छति   | = | क आगच्छति   |
|      | देवः + इति     | = | देव इति     |
|      | रामः + उवाच    | = | राम उवाच    |
|      | सूर्यः + उदेति | = | सूर्य उदेति |
|      | रामः + आगच्छति | = | राम आगच्छति |

5. यदि विसर्गात् पूर्वम् 'अ' अनन्तरं च कोऽपि मृदुव्यञ्जन-वर्णः स्यात् अर्थात् वर्गाणां तृतीयः; चतुर्थः; पञ्चमः वर्णः तथा य् र् ल् व् ह् भवति तदा पूर्वस्य अकारस्य विसर्गस्य च स्थाने ओ भवति ।

|      |                |   |              |
|------|----------------|---|--------------|
| यथा- | शिवः + वन्द्यः | = | शिवो वन्द्यः |
|      | रामः + गच्छति  | = | रामो गच्छति  |
|      | देवः + गच्छति  | = | देवो गच्छति  |
|      | रामः + वदति    | = | रामो वदति    |
|      | बालः + हसति    | = | बालो हसति    |

6. यदि विसर्गात् पूर्वम् 'आ' अनन्तरं कोऽपि स्वरः अथवा कोऽपि मृदु-व्यञ्जनवर्णः अर्थात् वर्गाणां तृतीयः; चतुर्थः; पञ्चमः वर्णः तथा य् र् ल् व् ह् भवति तदा विसर्गस्य लोपः भवति ।

|      |                   |   |                |
|------|-------------------|---|----------------|
| यथा- | देवाः + आगताः     | = | देवा आगता      |
|      | नराः + यान्ति     | = | नरा यान्ति     |
|      | बालकाः + वदन्ति   | = | बालका वदन्ति   |
|      | जनाः + गताः       | = | जना गताः       |
|      | देवाः + इह        | = | देवा इह        |
|      | मानवाः + जायन्ते  | = | मानवा जायन्ते  |
|      | बालाः + आगच्छन्ति | = | बाला आगच्छन्ति |

7. विसर्गात् पूर्वम् 'अ' 'आ' वर्णो त्यक्त्वा कोऽपि अन्यः स्वरः भवति तथा विसर्गात् अनन्तरं कोऽपि स्वरः अथवा मृदु-व्यञ्जनवर्णः अर्थात् वर्गाणां तृतीयः; चतुर्थः; पञ्चमः; वर्णः तथा य् र् ल् व् ह् भवति तदा विसर्गस्य स्थाने 'र्' भवति । यदि पश्चात् स्वरः भवति तदा 'र्' स्वरेण सह मिलति तथा पश्चात् व्यञ्जन-वर्णः भवति तदा 'र्' वर्णस्य ऊर्ध्वगमनं (रेफ) भवति ।

|      |               |   |            |
|------|---------------|---|------------|
| यथा- | भानुः + उदेति | = | भानुरुदेति |
|      | कवेः + गमनम्  | = | कवेर्गमनम् |
|      | गुरोः + आदेशः | = | गुरोरादेशः |
|      | कविः + अयम्   | = | कविरयम्    |

8. 'सः' 'एषः' एतयोः द्वयोः विसर्गात् अनन्तरं कोऽपि व्यञ्जनवर्णः भवति तदा विसर्गस्य लोपः भवति ।

|      |              |   |           |
|------|--------------|---|-----------|
| यथा- | सः + पठति    | = | स पठति    |
|      | सः + लिखति   | = | स लिखति   |
|      | एषः + वदति   | = | एष वदति   |
|      | एषः + गच्छति | = | एष गच्छति |

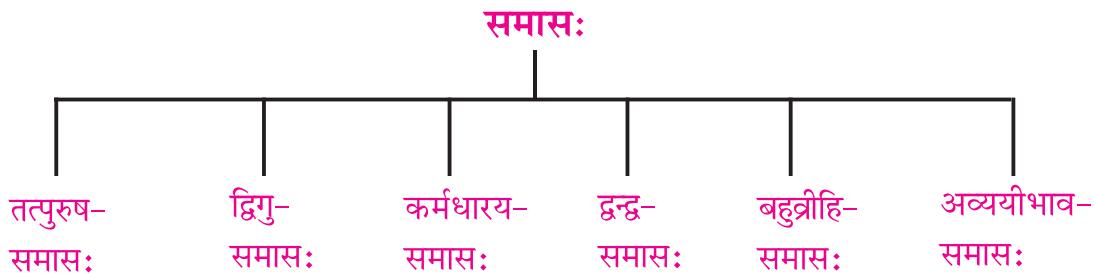
## समासपरिचयः

समसनं समासः अर्थात् संक्षेपीकरणम् एव समासः भवति । द्वयोः पदयोः अथवा बहूनां पदानां मेलनं समासः । समासमध्ये विभक्तेः लोपः भवति ।

यथा— राज्ञः पुरुषः — राजन् डस् पुरुष सु = राजपुरुषः

### समासः घटविधः

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मदगेहे नित्यमव्ययीभावः ।  
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुत्रीहिः ॥



### समासभेदविवेचनम्—

#### 1. तत्पुरुषसमासः:

**परिभाषा—** प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः ।

यत्र पूर्वपदं द्वितीया विभक्तिः सप्तमीविभक्तिपर्यन्तं भवति एवज्ञ उत्तरपदं प्रथमाविभक्त्यौ भवति तत्र (व्यधिकरण) तत्पुरुषसमासः । पूर्वपदस्य विभक्त्यानुसारमेव समासस्य नामकरणं भवति । यथा—

### द्वितीया तत्पुरुषः —

#### सामासिकपदम्

ग्रामगतः

भयप्रासः

दुःखापनः

#### समासविग्रहः

ग्रामं गतः

भयम् प्रासः

दुःखम् आपनः

### तृतीया तत्पुरुषः —

ज्ञानशून्यः

बाणहतः

आचारकुशलः

विद्याहीनः

अग्निदग्धः

ज्ञानेन शून्यः

बाणेन हतः

आचारेण कुशलः

विद्यया हीनः

अग्निना दग्धः

### चतुर्थी तत्पुरुषः —

दीनदानम्

लोकहितम्

यूपदारु

भूतबलिः

दीनाय दानम्

लोकाय हितम्

यूपाय दारुः

भूतेभ्यः बलिः

### पञ्चमी तत्पुरुषः —

पापमुक्तः

वृक्षपतिः

चौरभयम्

पापात् मुक्तः

वृक्षात् पतिः

चौरात् भयम्

### षष्ठी तत्पुरुषः —

राजपुत्रः

विद्यालयः

ईश्वरभक्तः

परोपकारः

राज्ञः पुत्रः

विद्यायाः आलयः

ईश्वरस्य भक्तः

परेषाम् उपकारः

## सम्मी तत्पुरुषः —

|             |                |
|-------------|----------------|
| जलमग्नः     | जले मग्नः      |
| युद्धनिपुणः | युद्धे निपुणः  |
| कार्यचतुरः  | कार्ये चतुरः   |
| सभापण्डितः  | सभायां पण्डितः |

तत्पुरुषसमासस्य अन्यानि उदाहरणानि—

### सामासिकपदम्

|            |                |
|------------|----------------|
| असत्यम्    | न सत्यम्       |
| अद्वितीयः  | न द्वितीयः     |
| अलौकिकः    | न लौकिकः       |
| अनर्थः     | न अर्थः        |
| अनादरः     | न आदरः         |
| अनुपस्थितः | न उपस्थितः     |
| अनेकः      | न एकः          |
| प्राचार्यः | प्रगतः आचार्यः |
| प्रपितामहः | प्रगतः पितामहः |

## 2. द्विगुसमासः —

परिभाषा— सद्ब्यापूर्वो द्विगुः।

यत्र प्रथमपदसद्ब्यावाची भवति तथा च उत्तरपदस्य विशेषतां ज्ञापयति सः द्विगुसमासः भवति । द्विगुसमासे समूहवाचकः अर्थः भवति ।

### सामासिकपदम्

|             |                              |
|-------------|------------------------------|
| त्रिभुवनम्  | त्रयाणां भुवनानां समाहारः    |
| चतुर्युग्म् | चतुर्णां युगानां समाहारः     |
| पञ्चवटी     | पञ्चानां वटानां समाहारः      |
| पञ्चपात्रम् | पञ्चानां पात्राणां समाहारः   |
| सप्तर्षयः   | सप्त च ते ऋषयः               |
| अष्टाध्यायी | अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः |

### 3. कर्मधारयसमासः —

**परिभाषा** — स चासौ कर्मधारयः।

यत्र प्रथमं पदं विशेषणम् उपमानं वा तथा द्वितीयं पदं विशेष्यम् उपमेयं वा भवति तत्र कर्मधारयसमासः भवति । यथा—

**सामासिकपदम्**

नीलोत्पलम्

घनश्यामः

महापुरुषः

कृष्णसर्पः

**समासविग्रहः**

नीलम् उत्पलम्

घन इव श्यामः

महान् चासौ पुरुषः

कृष्णः च असौ सर्पः

### 4. द्वन्द्वसमासः —

**परिभाषा** — प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः।

अर्थात् यत्र समेषां पदानां प्राधान्यं भवति तत्र द्वन्द्वसमासः। ‘चार्थे द्वन्द्वः’ अर्थात् ‘च’ इत्यस्यार्थे द्वन्द्वसमासः भवति ।

**सामासिकपदम्**

रामलक्ष्मणौ

पितरौ

हरिहरौ

हेमन्तशिशिरवसन्ताः

रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः

**समासविग्रहः**

रामश्च लक्ष्मणश्च

माता च पिता च

हरिश्च हरश्च

हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च

रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च

### 5. बहुव्रीहिसमासः —

**परिभाषा** — प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः।

यत्र सामासिकपदेभ्यः अन्यस्य बोधः भवति सः बहुव्रीहिः। बहुव्रीहिसमासस्य अन्ते यस्य सः अथवा येन इति शब्दः भवति ।

**सामासिकपदम्**

पीताम्बरः

चन्द्रशेखरः

दशाननः

सागरमेखला

**समासविग्रहः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः (विष्णुः)

चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिवः)

दश आननानि यस्य सः (रावणः)

सागरः मेखला यस्याः सा (भारतमाता)

## 6. अव्ययीभावसमासः —

**परिभाषा** — प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः।

अर्थात् यत्र प्रथमपदं प्रधानं भवति तथा च प्रथमपदम् अव्ययं भवति, द्वितीयपदं संज्ञावाचकं भवति सः अव्ययीभावसमासः। यथा—

| सामासिकपदम् | समासविग्रहः        |
|-------------|--------------------|
| यथाशक्तिः   | शक्तिम् अनतिक्रम्य |
| उपगङ्गम्    | गङ्गायाः समीपम्    |
| अनुविष्णु   | विष्णोः पश्चात्    |
| अधिहरि      | हरौ                |
| अनुकृष्णम्  | कृष्णस्य पश्चात्   |
| प्रतिदिनम्  | दिनं दिनम्         |

## कारकपरिचयः

### क्रियान्वयित्वं कारकम्

यस्य पदस्य सम्बन्धः साक्षात् क्रियया सह भवति, तत् कारकम् इति कथ्यते। कारकाणि षट् भवन्ति सम्बन्धः कारकं नास्ति। किन्तु विभक्तयः सस भवन्ति। कारकाणां विषये कथितं यत्—

कर्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।

आपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्॥

| विभक्तयः  | कारकाणि     | चिह्नानि (हिन्दीभाषायाम् अर्थः) |
|-----------|-------------|---------------------------------|
| प्रथमा    | कर्ता       | ने                              |
| द्वितीया  | कर्म        | को                              |
| तृतीया    | करणम्       | से, द्वारा                      |
| चतुर्थी   | सम्प्रदानम् | के लिए                          |
| पञ्चमी    | अपादानम्    | से (अलग होने में)               |
| षष्ठी     | —           | का, की, के, रा, री, रे          |
| सप्तमी    | अधिकरणम्    | में, पर                         |
| सम्बोधनम् | —           | भोः!, हे!, रे                   |

**विशेषः** — सम्बोधने प्रथमा विभक्तिः भवति।

## **कर्ताकारकम् —**

करोति इति कर्ता । कर्ताकारके प्रथमा विभक्तिः भवति । यथा—

क. रामः पठति ।

ख. बालकः गच्छति ।

## **कर्मकारकम् —**

कर्मणि द्वितीया विभक्तिः भवति । कर्ता यम् अत्यधिकम् अभिलषति, तत् कर्मकारकम् इति उच्यते ।

उदाहरणानि—

क. बालकः पुस्तकं पठति ।

ख. रामः फलं खादति ।

ग. बाला ग्रामं गच्छति ।

कर्मकारके अयं विशिष्टः नियमः अस्ति—

‘अभितः, परितः, समया, निकषा, प्रति, अनु, विना’ इत्यादीनां योगेऽपि द्वितीया विभक्तिर्भवति ।

यथा— ग्रामम् अभितः पर्वताः सन्ति ।

गत्यर्थकधातूनां योगे द्वितीया भवति, यथा-

क. वानरः वृक्षमारोहति ।

ख. सः विद्यालयं गच्छति ।

## **करणकारकम् —**

येन साधनेन कर्ता कार्यं संपादयति, तत् साधनं करणकारकम् इति कथ्यते । यथा—

क. गीता लेखन्या लिखति ।

ख. छात्रः कन्दुकेन क्रीडति ।

ग. कृष्णः यानेन गच्छति ।

कारकेऽस्मिन् अयं विशिष्टः नियमः अस्ति— ‘सह, साकम्, सार्धम्, समम्, अलम्’ इत्यादीनां योगेऽपि तृतीया विभक्तिर्भवति । यथा—

क. अहं लतया सह गच्छामि ।

अत्र ‘अलम्’ निषेधार्थकम् । यथा — अलं विवादेन ।

शरीरस्य यत् अङ्गं विकृतं स्यात् तस्मिन् तृतीया भवति,  
यथा— पादेन खञ्जः, नेत्रेण काणः, कर्णेन बधिरः ।

करणबोधक—(साधन) शब्देषु तृतीया भवति, यथा-

क. श्रमेण सफलता भवति ।

ख. विद्यया यशः प्राप्यते ।

## **सम्प्रदानकारकम् —**

यस्य कृते किमपि कार्यं सम्पन्नं क्रियते तस्मै चतुर्थी विभक्तिः, सम्प्रदानकारकं भवति । यथा—

क. महेशः मित्राय धनं ददाति ॥

ख. रमेशः अध्ययनाय विद्यालयं गच्छति ।

सम्प्रदानकारके अयं विशिष्टः नियमः अस्ति— ‘नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् योगेऽपि चतुर्थी भवति । यथा—

क. श्रीगणेशाय नमः ।

ख. सर्वेभ्यः स्वस्ति ।

अत्र ‘अलम्’ अव्ययम् पर्यासार्थकम् । यथा — अर्जुनः कर्णाय अलम् ।

रुच्यर्थकधातूनां योगे चतुर्थी भवति । यथा-

क. बालकाय मोदकं रोचते ।

### अपादानकारकम् —

यस्मात् स्थानात् वस्तुनः पृथक्करणं लक्ष्यते तत् अपादानकारकम् । अपादाने पञ्चमी विभक्तिः भवति । यथा—

क. वृक्षात् पत्रं पतति ।

ख. गङ्गा हिमालयात् प्रभवति ।

अपादानकारके विशेष नियमः अस्ति । भय, रक्षा इत्यर्थस्य धातूनां योगेऽपि पञ्चमी विभक्ति भवति ।

यथा— बालकः चौरात् विभेति ।

- जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थकधातूनां योगे पञ्चमी भवति, यथा- पापात् विरमति ।
- भय रक्षार्थकधातूनां योगेऽपि पञ्चमी भवति, यथा- चौराद् विभेति ।
- अन्य-आरात्-इतर-ऋते इत्यादीनां योगेऽपि पञ्चमी भवति, यथा-  
ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः ।
- दूरम्-अन्तिकम् (समीप) इत्यर्थेऽपि पञ्चमी षष्ठी वा भवति, यथा-  
ग्रामस्य ग्रामात् वा अन्तिकम् ।

### सम्बन्धः

हेतु शब्दस्य प्रयोगे षष्ठी विभक्तिः भवति । यथा —

क. भिक्षुकः अन्नस्य हेतोः वसति ।

### अधिकरणम् —

अधिकरणे सप्तमी स्यात् । यथा— सुधा मार्गे चलति । साध्वसाधुशब्दयोः प्रयोगेऽपि सप्तमी भवति ।

यथा—

क. कृष्णः साधुः मातरि ।

ख. कृष्णः असाधुः मातुले ।

## प्रत्ययपरिचयः

धातोः प्रातिपदिकशब्दस्य वा अन्ते संयुज्य विशेषार्थस्य यः बोधं कारयति सः प्रत्ययः। अथवा प्रातिपदिकशब्दानां धातूनां वा अन्ते ये प्रयुज्यन्ते ते प्रत्ययाः।

यथा — कृ + क्वतु = कृतवान्, लघु + तरप् = लघुतरः।

**प्रत्ययः द्विविधः** — कृतप्रत्ययः तद्वितप्रत्ययश्च।

**कृतप्रत्ययः** — ये प्रत्ययाः धातूनाम् अन्ते प्रयुज्यन्ते ते कृतप्रत्ययाः।

यथा — कृत्वा, ल्यप्, क्वतु, तुमुन्, क्त, इत्यादयः।

**तद्वितप्रत्ययः** — ये प्रत्ययाः प्रातिपदिकशब्दानाम् अन्ते प्रयुज्यन्ते ते तद्वितप्रत्ययाः। यथा — तरप्, तमप्, अण्, इत्यादयः।

### कृतप्रत्ययः

**क्त, क्वतु प्रत्ययौ ( भूतकालार्थे )**

| धातुः     | क्त प्रत्ययः     | अर्थः    | क्वतु प्रत्ययः        | अर्थः |
|-----------|------------------|----------|-----------------------|-------|
| पद्       | + क्त = पठितः    | पढ़ा गया | + क्वतु = पठितवान्    | पढ़ा  |
| क्रीड़    | + क्त = क्रीडितः | खेला गया | + क्वतु = क्रीडितवान् | खेला  |
| हस्       | + क्त = हसितः    | हँसा गया | + क्वतु = हसितवान्    | हँसा  |
| लिख्      | + क्त = लिखितः   | लिखा गया | + क्वतु = लिखितवान्   | लिखा  |
| पत्       | + क्त = पतितः    | गिरा     | + क्वतु = पतितवान्    | गिरा  |
| गम्       | + क्त = गतः      | गया      | + क्वतु = गतवान्      | गया   |
| श्रु      | + क्त = श्रुतः   | सुना गया | + क्वतु = श्रुतवान्   | सुना  |
| पा (पिक्) | + क्त = पीतः     | पिया गया | + क्वतु = पीतवान्     | पिया  |
| खाद्      | + क्त = खादितः   | खाया गया | + क्वतु = खादितवान्   | खाया  |
| वद्       | + क्त = उदितः    | बोला गया | + क्वतु = उदितवान्    | बोला  |

## तुमुन् प्रत्ययः (के लिए) चतुर्थ्याः अर्थे —

| धातुः  | प्रत्ययः      | शब्दः      | अर्थः        |
|--------|---------------|------------|--------------|
| पठ्    | तुमुन् (तुम्) | पठितुम्    | पढ़ने के लिए |
| क्रीड् | तुमुन् (तुम्) | क्रीडितुम् | खेलने के लिए |
| खाद्   | तुमुन् (तुम्) | खादितुम्   | खाने के लिए  |
| हस्    | तुमुन् (तुम्) | हसितुम्    | हँसने के लिए |
| पत्    | तुमुन् (तुम्) | पतितुम्    | गिरने के लिए |
| वद्    | तुमुन् (तुम्) | वक्तुम्    | बोलने के लिए |
| लिख्   | तुमुन् (तुम्) | लेखितुम्   | लिखने के लिए |
| पा     | तुमुन् (तुम्) | पातुम्     | पीने के लिए  |
| श्रु   | तुमुन् (तुम्) | श्रोतुम्   | सुनने के लिए |

### तद्वितप्रत्ययः

#### तरप्, तमप्, प्रत्ययौ

- विशेषणशब्दानां भाववर्धनार्थं तरप् (तर), तमप् (तम) प्रत्यययोः प्रयोगः भवति ।
- विशेषणशब्दानां तिसः अवस्थाः भवन्ति—
- क. सामान्य-अवस्था — सुन्दरः = रामः सुन्दरः बालकः अस्ति ।
- ख. उत्तर-अवस्था — सुन्दरतरः = रामः मोहनात् सुन्दरतरः अस्ति । (द्वयोः निर्धारणार्थं तरप् प्रत्ययः भवति)
- ग. उत्तम-अवस्था — सुन्दरतमः = रामः सर्वेषु बालकेषु सुन्दरतमः अस्ति । (बहुषु निर्धारणार्थं तमप् प्रत्ययः भवति)

| शब्दः | अर्थः  | तरप् प्रत्यय<br>युक्तः शब्दः | अर्थः       | तमप् प्रत्यय<br>युक्तः शब्दः | अर्थः            |
|-------|--------|------------------------------|-------------|------------------------------|------------------|
| अल्पः | कम्    | अल्पतरः                      | अधिक कम्    | अल्पतमः                      | सबसे अधिक कम्    |
| लघुः  | छोटा   | लघुतरः                       | अधिक छोटा   | लघुतमः                       | सबसे अधिक छोटा   |
| गुरुः | बड़ा   | गुरुतरः                      | अधिक बड़ा   | गुरुतमः                      | सबसे अधिक बड़ा   |
| महान् | बड़ा   | महत्तरः                      | अधिक बड़ा   | महत्तमः                      | सबसे अधिक बड़ा   |
| उच्चः | ऊँचा   | उच्चतरः                      | अधिक ऊँचा   | उच्चतमः                      | सबसे अधिक ऊँचा   |
| कृशः  | दुर्बल | कृशतरः                       | अधिक दुर्बल | कृशतमः                       | सबसे अधिक दुर्बल |

विशेषणशब्दानां रूपाणि विशेष्यशब्दानुसारेण त्रिषु लिङ्गेषु प्रचलिष्यन्ति ।

## अव्ययपरिचयः

**यन्नव्येति तदव्ययम् —**

- न-व्ययम् इति अव्ययम् अर्थात् यत् न परिवर्तते तद् अव्ययम् इति ।
- यत् त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वेषु, वचनेषु सर्वासु विभक्तिषु च समानरूपं भवति तद् अव्ययमिति कथ्यते ।
- **अव्ययं पञ्चविधम् —** उपसर्गः; क्रियाविशेषणम्, चादिः; समुच्चयबोधकः; विस्मयादिबोधकश्च ।
- **उपसर्गाः —** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, एते 22 उपसर्गाः क्रियायोगे भवन्ति ।  
 यथा— सः प्रहरति । (मारता है)  
 रामः अनुभवति । (अनुभव करता है)
- **क्रियाविशेषणानि —** स्वः (स्वर्गः) अन्तरम्, प्रातः, उच्चैः, शनैः, ऋते, विना, युगपत्, पृथक्, ह्यः, श्वः; दिवा, रात्रौ, सायम्, सहसा, नाना, यतः, ततः, यदा, तदा, यथा, तथा कदा, इदानीम्, यदि, तर्हि, इत्यादीनि ।  
 यथा— मोहनः प्रातः उत्तिष्ठति । (प्रातः = सबेरे)  
 रामः श्वः विद्यालयं गमिष्यति । (श्वः = आने वाला कल)
- **चादिः —** च, वा, भूयः, खलु, तु, वै, मा, न इत्यादयः ।  
 यथा— रमेशः संस्कृतं गणितं च पठति । (च = और)  
 विवेकः खलु नृत्यं करिष्यति (खलु = निश्चित)
- **समुच्चयबोधकाः —** अथ, उत, चेत्, नोचेत् इत्यादयः ।  
 यथा— अथ कथा प्रारम्भते । (अथ = आरम्भ सूचक शब्द)  
 बुभुक्षा अस्ति चेत् खादतु नोचेत् मा खादतु । (चेत् = यदि, नोचेत् = यदि नहीं)
- **विस्मयादिबोधकाः —** अहह, अहो, बत, हा, इत्यादयः ।  
 यथा— अहो ! कियत् भयङ्करः सर्पः । (अहो = आश्र्य सूचक)  
हा ! सज्जनः पीडितः दुर्जनेन (हा = कष्टसूचक)  
 सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।  
 वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् ॥

## अव्ययप्रयोगः

| अव्ययम् | वाक्यप्रयोगः                                       |
|---------|--|
| तथापि   | — बुभुक्षा अस्ति <u>तथापि</u> न खादामि ।           |
| सहसा    | — <u>सहसा</u> सिंहः कूपे अकूर्दत् ।                |
| मिथ्या  | — ब्रह्म सत्यं जगत् <u>मिथ्या</u> अस्ति ।          |
| बहुधा   | — सफलतायाः सूत्राणि <u>बहुधा</u> सन्ति ।           |
| प्रायः  | — <u>प्रायः</u> सर्वे जनाः धनमिच्छन्ति ।           |
| कृते    | — सः भोजनस्य <u>कृते</u> भोजनालयं गच्छति ।         |
| खलु     | — कष्टप्रदा <u>खलु</u> दरिद्रता ।                  |
| तर्हि   | — यदि पिपासा नास्ति <u>तर्हि</u> कथं पिबति ।       |
| दूरम्   | — विद्यालयः गृहाद् <u>दूरं</u> नास्ति ।            |
| नित्यम् | — भक्तः <u>नित्यम्</u> ईश्वरं भजति ।               |
| परन्तु  | — अहं पठितुमिच्छामि <u>परन्तु</u> पुस्तकं नास्ति । |
| अग्रतः  | — मम गृहस्य <u>अग्रतः</u> एव मन्दिरमस्ति ।         |



## निबन्ध-रचना

### पुस्तकम्

1. पुस्तकानि मद्यम् अतीव रोचन्ते ।
2. मम समीपे बहूनि पुस्तकानि सन्ति ।
3. पुस्तकानि अतीव मनोहराणि सन्ति ।
4. मम समीपे चित्रपुस्तकम् अपि अस्ति ।
5. रमणीयं चित्रं चित्तम् आनन्दयति ।
6. पुस्तकानि ज्ञानस्य भण्डारः भवन्ति ।
7. पुस्तकानि अस्माकं मित्राणि सन्ति ।
8. पुस्तकानां सङ्गतिः लाभप्रदा भवति ।
9. अस्माभिः पुस्तकानि रक्षणीयानि ।
10. स्वगृहे लघुः पुस्तकालयो निर्मातव्यः ।
11. पुस्तकेषु यत्र कुत्रचित् न लेखनीयम् ।

### उद्यानम्

1. उद्यानम् अत्यन्तं रमणीयं भवति ।
2. जनाः उद्याने भ्रमणार्थं गच्छन्ति ।
3. बालकाः उद्याने क्रीडन्ति ।
4. उद्याने तडागः अपि अस्ति ।
5. उद्याने वृक्षाः रोहन्ति ।
6. वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः फलैः च शोभन्ते ।
7. खगाः वृक्षेषु निवसन्ति ।
8. तत्र ते नीडान् रचयन्ति ।
9. प्रभाते खगानां कूजनं मनोहरं भवति ।
10. वर्तमानकाले वृक्षारोपणकार्यं तीव्रगत्या प्रसरति ।

## विद्यालयः

1. मम विद्यालयः ‘गुराडियामाता’ ग्रामे स्थितः अस्ति ।
2. विद्यालयस्य भवनम् अतीवसुन्दरम् अस्ति ।
3. अहम् प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि ।
4. अहं विद्यालयं गत्वा गुरून् प्रणमामि ।
5. गुरवः स्नेहेन पाठं पाठयन्ति ।
6. विद्यालये एकम् उद्यानम् अपि अस्ति ।
7. विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति ।
8. विद्यालये एकं विशालं क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति ।
9. तत्र छात्राः क्रीडन्ति ।
10. विद्यालयः मह्यम् अतीव रोचते ।

## धेनुः

1. धेनुः अस्माकं माता अस्ति ।
2. धेनोः चत्वारः पादाः द्वे शृङ्गे एकं लाङ्गूलं च भवति ।
3. धेनूनां विविधाः वर्णाः भवन्ति ।
4. धेनुः तृणानि भक्षयति ।
5. धेनुः जनेभ्यः मधुरं पयः प्रयच्छति ।
6. गोमूत्रेण विविधानां दोषाणां रोगाणां च नाशः भवति ।
7. धेनोः दुधेन दधि, तक्रम्, नवनीतम्, घृतं च निर्मितं भवति ।
8. भारतीयसंस्कृतौ धेनूनां महत्त्वम् अधिकम् अस्ति ।
9. धेनोः दुधं मधुरम् पथ्यं हितकारि च भवति ।
10. वयं धेनुं मातृरूपेण पूजयामः ।

## महापुरुषः — आजादचन्द्रशेखरः

1. महांश्चासौ पुरुषः इति महापुरुषः।
2. पुरुषः महत्कार्यं कृत्वा महापुरुषः भवति।
3. समाजहितार्थं राष्ट्रहितार्थं च यानि कार्याणि भवन्ति, तानि एव महत्कार्याणि भवन्ति।
4. चन्द्रशेखरः आजादः एवमेव राष्ट्रसेवी महापुरुषः अस्ति।
5. 1906 ख्रीस्ताब्दे आजादचन्द्रशेखरस्य जन्म अभवत्।
6. अस्य जन्मभूमिः अलीराजपुरमण्डलस्य ‘भाभरा’ नामकग्रामे अस्ति।
7. तस्य पिता सीतारामतिवारी, माता च जगरानीदेवी आसीत्।
8. चन्द्रशेखरस्य अध्ययनं वाराणस्यां संस्कृतविद्यालये अभवत्।
9. सः हिन्दुस्तान-सोसलिस्ट-रिपब्लिकन-आर्मी नामा सङ्घटनं कृतवान्।
10. आजादचन्द्रशेखरः 1931 ख्रीस्ताब्दे इलाहबादनगरे (प्रयागनगरे) वीरगतिं प्राप्नोत्।



## अभ्यास-प्रश्नपत्रप्रारूपम्

### विषयः - संस्कृतम् कक्षा- अष्टमी

प्रश्नः 1 (अ) समुचितपदं चित्वा लिखत-

(क) कार्यक्षेत्रे -

(अ) तरणीयम् (ब) त्वरणीयम् (स) वदनीयम् (द) स्मरणीयम्

(ख) गुलत्वाकर्षणस्य सिद्धान्तः प्रतिपादितः -

(अ) आदित्यदासेन (ब) आर्यभटेन (स) वराहमिहिरेण (द) मोहनदासेन

(ग) वसन्तपञ्चमी पर्व भवति -

(अ) फाल्गुनमासे (ब) माघमासे (स) चैत्रमासे (द) कार्तिकमासे

(घ) अहिल्याबाई इत्यस्याः पत्युः नाम आसीत् -

(अ) दामोदररावः (ब) खण्डेरावः (स) कृष्णरावः (द) श्यामरावः

(ङ) सर्वः पश्यतु -

(अ) दूरदर्शनम् (ब) कार्याणि (स) अभद्राणि (द) भद्राणि

(ब) प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

(प्रकृतिहिताय, रामकृष्णपरमहंसः, मेकलसुता, शीलं, एकादशवर्षाणि)

(क) नर्मदायाः अपरं नाम ..... अस्ति ।

(ख) ..... सर्वत्र वै धनम् ।

(ग) प्रवर्ततां ..... पार्थिवः ।

(घ) चित्रकूटे रामचन्द्रः ..... यावत् निवासं कृतवान् ।

(ङ) स्वामिविवेकानन्दस्य गुरुः ..... आसीत् ।

प्रश्नः 2 अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृते लिखत-

कस्मिंश्चित् वने निम्बवृक्षे एकं चटकायुगलं प्रतिवसति स्म । समये चटकया

अण्डानि दत्तानि, युगलम् अति प्रसन्नम् आसीत् । एकस्मिन् दिने आतपीडितः एकः

मदमत्तः गजः तत्र आगतः । मदेन सः तस्य वृक्षस्य तां शाखां नाशितवान् यस्यां

शाखायां चटकायाः अण्डानि आसन् । अतः अण्डानि अपि नष्टानि ।

- (क) चटकायुगलं कस्मिन् वृक्षे प्रतिवसति रम्?
- (ख) अण्डानि क्या दत्तानि?
- (ग) एकस्मिन् दिने कः तत्र आगतः?
- (घ) मदेन गजः कां नाशितवान्?

### अथवा

एकदा विक्रमादित्यः नगरभ्रमणसमये एकं मरणासन्नं लग्णं दृष्टवान्। तस्य दर्शनेन मनसि वैराग्यम् उद्भूतम्। अतः मायामोहमयं संसारं ज्ञात्वा सः महामन्त्रिणि राज्यभारं समर्प्य वनम् अगच्छत्।

- (क) विक्रमादित्यः नगरभ्रमणसमये कं दृष्टवान्?
- (ख) विक्रमादित्यस्य मनसि किम् उद्भूतम्?
- (ग) सः महामन्त्रिणि किं समर्प्य वनम् अगच्छत्?
- (घ) ‘अगच्छत्’ इत्यस्मिन् पदे कः धातुः?

- प्रश्नः 3 अधोलिखितपद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृते लिखत-  
उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।  
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरिते भयम्॥
- (क) उद्योगे किं नास्ति? (ख) जपतो किं नास्ति?
  - (ग) भयं कदा नास्ति?
  - (घ) ‘मौने’ इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः किं च वचनम्?

### अथवा

माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।

मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्॥

- (क) भूमेः गुरुतरा का? (ख) खात् उच्चतरः कः?
- (ग) वातात् शीघ्रतरं किम्? (घ) ‘तृणात्’ इत्यस्मिन् पदे विभक्तिं वचनं च लिखत?

- प्रश्नः 4 (अ) पाठ्यपुस्तकात् कण्ठस्थीकृतम् एकं सुभाषितश्लोकं लिखत यः अस्मिन् प्रश्नपत्रे नास्ति।

(ब) श्लोकपूर्ति कुरुत-

विना वेदं विना ..... , विना ..... कथाम् ।

विना ..... , ..... भारतं न हि ॥

(स) पाद्यपुस्तकात् कण्ठस्थीकृताम् एकां सूक्तिं लिखत ।

प्रश्नः 5 (अ) अधोलिखितेषु (5) पञ्चप्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन संस्कृते लिखत-

(क) करिमन् मासे गणतन्त्रदिवसः भवति?

(ख) विद्या कीदृशी भवेत्?

(ग) विषपानं कः कृतवान्?

(घ) चन्द्रशेखरस्य पितुः नाम किम्?

(ङ) नर्मदा कस्मात् स्थानात् प्रादुर्भवति?

(च) अहिल्यायाः जन्मग्रामः कः?

(छ) मेघदूतस्य कविः कः?

(ब) अधोलिखितेषु (5) पञ्चप्रश्नानाम् उत्तराणि एकवाक्येन संस्कृते लिखत-

(क) कुत्र चरणीयम्?

(ख) गुणेषु कः करणीयः?

(ग) यूनां प्रेरकः पथप्रदर्शकश्च कः?

(घ) चित्रकूटे कः विश्वविद्यालयः अस्ति?

(ङ) विक्रमादित्यस्य ध्येयवाक्यं किम् आसीत्?

(च) काशीतलवाहिनी का?

(छ) पञ्चशाकानां नामानि लिखत?

प्रश्नः 6 (अ) अधोलिखितेषु (2) द्वयोः शब्दरूपाणि निर्देशानुसारं त्रिषु वचनेषु लिखत-

(क) बालक - प्रथमा (ख) मातृ - द्वितीया (ग) राजन् - षष्ठी

(ब) अधोलिखितेषु (2) द्वयोः धातुरूपाणि निर्देशानुसारं त्रिषु वचनेषु लिखत

(क) वद् - लट्टकारः (वर्तमानकालः) प्रथमपुरुषः ।

(ख) सेव् - लृट्टकारः (भविष्यकालः) मध्यमपुरुषः ।

(ग) लिख् - लड्डकारः (भूतकालः) उत्तमपुरुषः ।

(स) अधोलिखितेषु (4) चत्वारि अशुद्धवाक्यानि शुद्धं कुरुत-

(क) श्रीगणेशं नमः (ख) सः पुस्तकं पठसि ।

(ग) कृष्णः यानात् गच्छति । (घ) छात्रः फलं खादामि ।

(ङ) लक्ष्मणः रामस्य सह क्रीडति । (च) गीता बालकं भोजनं ददाति ।

- प्रश्न: 7 (अ) अधोलिखितेषु (3) त्रयाणां धातुं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत-  
 (क) पठितुम् (ब) गत्वा (ग) गतः (घ) खादितवान्  
 (ब) अधोलिखितेषु (2) द्वौ उपसर्गौ योजयित्वा पदनिर्माणं कुरुत-  
 (क) प्र (ख) अनु (ग) सु  
 (स) अधोलिखितेषु (2) द्वयो अव्ययोः प्रयोगं कृत्वा वाक्यनिर्माणं कुरुत-  
 (क) अद्य (ख) न (ग) प्रायः
- प्रश्न: 8 (अ) अधोलिखितेषु (3) त्रयाणां पदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनाम लिखत-  
 (क) विद्यालयः (ख) सज्जनः (ग) नमस्ते (घ) महोत्सवः  
 (ब) अधोलिखितेषु (3) त्रयाणां पदानां समासविग्रहं कृत्वा समासनाम लिखत-  
 (क) राजपुत्रः (ख) महापुरुषः (ग) पितौ (घ) चन्द्रशेखरः  
 (स) अधोलिखितेषु (3) तिस्रः सङ्ख्याः संस्कृते लिखत-  
 (क) 28 (ख) 36 (ग) 41 (घ) 46
- प्रश्न: 9 अधोलिखितपदैः पत्रं पूरयत-  
 (पीडितः, अवकाशं, निवेदनम्, अद्य, आगन्तुं)

सेवायाम्,

श्रीमान् प्रधानाध्यापकमहोदयः

शासकीयमाध्यमिकविद्यालयः

जाबालिपुरम्

महोदय !

विनम्रं.....अस्ति यत् अहम्.....शीतज्वरेण.....

अस्मि । अत एव विद्यालयम्.....न शक्नोमि । अतः एकदिवसीयम् .....

स्वीकरोतु ।

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः

दिनांकः - 22 फरवरीमासः 2009 ई.

अजयः

अष्टमकक्षा

- प्रश्न: 10 अधोलिखितेषु एकस्मिन् विषये दशवाक्येषु संस्कृते निबन्धं लिखत-  
 (क) धेनुः (ख) विद्यालयः (ग) उद्यानम् (घ) पुस्तकम्

